महिम्न स्तोत्र

गंधर्वों के राजा पुष्पदंताचार्य का बनाया हुआ श्रीगौरी शंकर जी की प्रसिद्ध स्तुति है इस स्तुति को बना कर पुष्पदंताचार्य गुरु के क्रोध से उद्धार हो कर मुक्ति को प्राप्त हुआ यह स्तोत्र शीघ्र फल दायक है और महादेव जी को अति प्यारा है दीक्षा और दान, तप, तीर्थ, होम, यज्ञ का सोलह गुना फल इसके नित्य पाठ करने से होता है

भक्ति अनुराग के निमित्त अर्थ सहित

दूसरी मरतबा

लाला जै दयाल एजन्ट दिहली की फ़रमायश से

मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में छपा॥

वैशाख संवत् १९३६

مہمن استوتر

گندھربون کے راجہ پشپ دنتاچارج کا بنایا ہوا ہی مشہور و معروف استت سری گوری شنکر جی کی ہے اس آچارج نے اس استت کو بناکر اپنے گرو کے سراپ سی بخات پاکر مکت پدارتھ کو حاصل کیا یہ استوتر جلد پھل دایک اور مہادیو جی کو بہت پیارا ہی دکشا اور دان تپ تیرتھ ہوم جگ کا ۱۶ سولہ گنا پھل اسکے روز روز پاٹ کرنے سے ہوتا ہی

چنانچہ بھگت انراگ کے نمت ارتھ سہت فارسی و دیوناگری حروف مین

دوسری مرتبہ

حسب فرمائش و تحریک صاحب فہم و فراست لالہ جیدیال ایجنٹ کوٹھی دہلی شاخ مطبع ہذا کے

مطبع منشی نول کشور مقام لکھنؤ مین چھپا

ماہ اپریل ۱۸۷۹ء

श्रीगणेशायनमः

अथमहिम्नसटीकलिख्यते

मूल॥ महिम्नःपारन्तेपरम
विदुषोयद्यसदृशीःस्तुतिर्ब्र
ह्मादीनामपितदवसन्नास्त्व
यिगिरः अथावाच्यःसर्व
स्वमतिपरिणामावधिगृण
न् ममाप्येषस्तोत्रेहरनिर
पवादःपरिकरः ॥ १ ॥

टीका॥ पुष्पदंताचार्यस्तुति करते हैं॥ हे महादेव तुम्हारी महिमा केजो पार को न जानै उसकी स्तुतिजो तुम्हारे पसन्द के माफिक न हो तो ब्रह्मादिकों ने तुम्हारी जो स्तुति करी है वह भी तुम्हारे नापसन्द हो जावैगी क्योंकि स्तुति नाम है गुणों का कहना तुम्हारे गुणों के पार को मैंभी नहीं जानता हूं और ब्रह्मादिक भी नहीं जानते हैं जो उनकी स्तुति आपने पसन्द करी तो मेरी भी स्तुति पसन्द कीजिये मैं और वे गुणोंके जान्ने में बराबर हूं इस वास्ते स्तुति करने वाले अपनी २ मतिके प्रमाण के अनुसार सभी अच्छे हैं

شری گنیشایہ نمہ

شری مہمن بھاکھا ٹیکا سہت

اشلوک

۱ مہمنہ پارنتے پرم بدشو یدی سدرشی
استتر برہمادینامپ تدوسنّا
ستوی گرہ اتھاباچیہ سر با
سمت پرناماودھ گرننگ
ممابیپے کھس توترے ہرنرپواد
پرکرہ ۱

اشلوک کا ٹیکا

۱ پشپ دنتاچارج استت کرتے ہین کہ ہے مہادیو تمہاری مہما کے جو پار کو نجانے اوسکی استت جو تمہاری پسند کے موافق نہو تو برہمادکون نے جو تمہاری استت کی ہے وہ بھی تمہارے ناپسند ہوجاے گی کیونکہ استت نام ہے گنون کا کہنا تمہارے گنون کے پار کو مین بھی نہین جانتا ہون اور برہمادک بھی نہین جانتے ہین جو اون کی استت آپنے پسند کی ہے تو میری بھی استت پسند کیجیے مین اور وے گنون کے جاننے مین برابر ہون اسواسطے استت کرنے والے اپنی اپنی مت کے پرمان کے انسار سبھی اچھے ہین میرا جو جتن ہے

मेराजोयत्न है आपकी स्तुति करने
केवास्ते अच्छा है और जितने स्तुति
करनेवाले हैं अपनी बुद्धि के माफि-
क सभी अच्छे हैं ॥ १॥ ॥ मू ॥
अतीतःपंथानं तव च महि-
मा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृ-
त्यायंचकितमभिधत्तेश्रु-
तिरपि। सकस्यस्तोतव्यः
कतिविधगुणःकस्यवि-
षयःपदेत्ववीचीनेपत
तिनमनःकस्यनवचः २
टी॥ हे शिव तुम्हारी जो महिमा
है सो वाणी और मन से भी परे
है जो कहो कि जो वाणी और मनसे
परे है तो वेद कैसे गावता है तो यह
समझो कि वेद जो है संसार को हटाव-
ता हुआ डरता २ युक्ति से कहता है
वेद भी गुण जिन के नहीं कह सक्ता है

اکی استت کرنیکو اسلئے اچھا ہے اور جتنے استت
کرنیوالے ہیں اپنی اپنی بدھ کی موافق سبھی اچھے ہیں

اشلوک

۲ اتی تہ پنتھانگ توچ مہما وانگ
منسیو رتدیا برتیا یانگ چکت مبھی
دھتے شرت رپ - سکستو
ستوتبیہ کت بدھ گنہ کسیہ
بکھیہ پدے تو ربا چینے پتت
نمنہ کسیہ نہ وچہ

ٹیکا

۲ ہے شیو تمہاری جو مہما ہے سو بانی اور من
سے بھی پرے ہے اگر اعتراض کرو کہ جو بانی اور
من سے پرے ہے تو بید کیسے گاتا ہے تو
یہ سمجھو کہ بید جو ہے سنسار کو ہٹاتا ہوا ڈرتا
ڈرتا یکت سے کہتا ہے بید بھی گن جن
کے نہیں کہ سکتا ہے اون کی استت



उनकी स्तुति कौन करसके है और कितनी तरह के गुण उनमें हैं यह कौन कह सक्ता है और उनमें किसकी इंद्रिय पहुंच सक्ती है अर्थात् किसी की नहीं पहुंच सक्ती है इसवास्ते क्या मालूम होता है कि वेद जो कहता है ऊपर से जो एक बात मिली उसको बताता है॥२॥

मू॥ मधुस्फीता वाचः परम
ममृतं निर्मितवतस्तव ब्र
ह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्वि
स्मयपदं मम त्वेतां वाणीं
गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेस्मिन्पुरमथ-
नबुद्धिर्व्यवसिता॥३॥

टी॥ हे महादेव निर्मल और बहुत परम अमृत रूप जो वेद रूप वाणी है उसके प्रकट करने वाले जो तुम तुम्हारे अगाड़ी ब्रह्मा की वाणी क्या कुछ आश्चर्य रूप है अर्थात् कुछ आश्चर्य रूप नहीं क्योंकि जिन्होंने खास वेद को प्रकट किया उनके आगे ब्रह्मा की वाणी क्या आश्चर्य होगी क्योंकि सूर्य के अगाड़ी दीपक अचरज नहीं है जो कोई कहै कि ब्रह्मा

کون کرسکتا ہے اور کتنے طرح کے گن اونمیں ہیں یہ کون کہہ سکتا ہے اور اونمیں کسکی اندری پہونچ سکتی ہے یعنی کسی کی نہیں پہونچ سکتی ہے اسواسطے کیا معلوم ہوتا ہے کہ بید جو کہتا ہے اوپر سے جو ایک بات ملی اوسکو بتاتا ہے ۲

اشلوک

۳ مدھسپھیتا باچہ پرمم مرتنگ
نرمت وتہ استو برہمن کمباگپ سر
گرورو سمیہ پدنگ ممتوی تانگ
بانینگ گن کتھن پنین بھوتہ پنامی
تیرتھے اسمن پرمتھن بدھر بیوستا

ٹیکا

۳ ہے مہادیو نرمل اور بہت پرم امرت روپ جو بید روپ بانی ہے اوسکے پرگھٹ کرنے والے جو تم سو تمھارے آگے برہما کی بانی کیا کچھ اچرج روپ ہے یعنی کچھ اچرج روپ نہیں کیونکہ جنہوں نے خاص بید کو پرگھٹ کیا اونکے آگے برہما کی بانی کیا اچرج ہوگی کیونکہ سورج کے آگے دیپک اچرج نہیں ہے اگر کوئی اعتراض کرے کہ برہما کی بانی تو شیوجی سے

की तो वाणी शिव जी के आगे आश्चर्य
नहीं तू जो शिवजी की स्तुति करता है
तेरी वाणी आश्चर्य रूप कैसे होगी इसवा
स्ते मैं कहता हूं कि मेरी तो बुद्धि यह बात
कहती है कि शिवजी के गुणों को वर्णन
करके अपनी वाणी को पवित्र करता हूं हे
पुरमथन इसवास्ते मेरा भी स्तुति क
रना उचित है ॥ ३ ॥ मू ॥ तवै-
श्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्र-
लयकृत् त्रयीवस्तु व्यस्तं
तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद रम
णीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रो
शीं विदधत इहैके जडधियः
॥ ६ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ॥
टी ॥ हे महादेव तुम्हारा जो प्रताप है
सो जगत् को रचता है और जगत् की
रक्षा करता है और चारों वेदों का धन है
और तीन जो मूर्ति ब्रह्मा विष्णु महे
श की हैं तीनों में झलक रहा है ऐसा
तुम्हारा प्रताप है हे महादेव क-
र्म शास्त्र वाले जो हैं जड़ बुद्धि वा-
ले हैं सो वे देवताओं की तारीफ़

اسکے اچرج نہین تو شیوجی کی استت
کرتا ہے تیری بانی اچرج روپ کیسے
ہوگی اسواسطے مین کہتا ہون کہ میری تو بدّہ
یہ بات کہتی ہے کہ شیوجی کے گنون کو برن کرکے
اپنی بانی کو پبتر کرتا ہون ہے پرمتھن اسواسطے
میرا بھی استت کرنا مناسب ہے ۔

اشلوک

تویشورینگ یت تجگ دُدیے رچھا
پرلے کرت تری بستُ بیستنگ تشر
گھو گن بھنّا سو تنکھ ۔ ابھبیانامسمن
بردرمنی یامرمنی بہنگ تنگ بیاکرو
شینگ بددھت اہی کے جڑدھیہ ۔

ٹیکا

ہے مہادیو تمہارا جو پرتاپ ہے سو جگت کو
رچتا ہے اور جگت کی رچھا کرتا ہے اور
جگت کا پالن کرتا ہے اور چاری بیدونکا
دھن ہے اور تین جو مورت برہما بشن مہیشر
کی ہین تینون مین جھلک رہا ہے ایسا
تمہارا پرتاپ ہے ہے مہادیو کرم شاستر
والے جو ہین جڑ بدّھ والے ہین سو وہ
دیوتاؤن کی تعریف کی برائی کرتے

कीबुराई करते हैं सो वह जो बुराई है उनके माड़े कर्मों से बुरी भी हैं परउ नको अच्छी लगती हैं ॥ ४ ॥ ४ ॥

मू ॥ किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च । अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥

टी॥ सो जो महादेव है त्रिभुवन को रचै है सो क्या उनकी चेष्टा है और कैसी उनकी काया है और कैसा उनका उपाय है और क्या उनका आसरा है हे महादेव तुम्हारा जो प्रताप है सो तर्कना अर्थात् कहने के योग्य नहीं उसमें यह तर्कना उठाते हैं सो यह जो तर्कना है जो कोई मंदबुद्धि हैं तिनको मोहित करती है अर्थात भरमावती है जो अच्छे लोग हैं वह नहीं भरमते हैं ॥ ५ ॥ मू ॥ अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोपि जगतामधिष्ठातारं किं

برائی کرتے ہین سو وہ جو برائی کرتے ہین اونکے مارے کرمون سے بری بھی ہین پر اونکو اچھی لگتی ہین

اشلوک ۵

کِمیِ ہہ کنگ کایہ سکھلُ کِمُپایسترِ
بھونگ کِمادھارو دھاتا سِرجتِ
کِمُپادان اتِچ - اترکیِ شورجیتو
ینو سردہ استھو ہت دھیہ کُتر
کونیک کانشچن مُکھ ریت موہا جگتہ -

ٹیکا ۵

سو جو مہادیو ہین ترِبھون کو رچے ہین سو کیا اونکی چیشٹا ہے اور کیسی اونکی کایا ہے اور کیسا اونکا اوپاو ہے اور کیا اونکا آسرا ہے ہے مہادیو تمھارا جو پرتاپ ہے سو ترکنا یعنی تقریر کے لایق نہین اوسمین یہ ترکنا اوٹھاتے ہین سو یہ جو ترکنا ہے جو کوئی مندبدھ ہین تنکو موہت کرتی ہے یعنی بھرماوتی ہے جو اچھے لوگ ہین وہ نہین بھرمتے ہین -

اشلوک ۶

اجنمانو لوکا کمو ویو و نتو پجگتا
مدھشٹھا تارنگ کنگ بھو بدھ

भवविधिरनादृत्यभवति
। अनीशो वा कुर्याद्भुवनज
ननेकः परिकरो यतो मंदा-
स्त्वां प्रत्यमरवर संशेरतइ
मे ॥६॥ टी॥ हे महादेव ये जो
चौदह भुवन हैं क्या पैदा नहीं हुए
अर्थात पैदा हुए हैं क्या इन की पै
दायश तुम्हारे बिना है अर्थात तु
म्ही से है क्या कोई आदमी अनीश
करसक्ता है जगत को अर्थात ई
श्वर ही कर सक्ता है और जो कोई
तुममे संशय करते हैं कि पैदायश
किसी और ने करदी होगी सो वे वड़े
मूर्ख हैं क्योंकि यह सब तुम्हारी
ही पैदा की हुई है ॥६॥ (मू)
त्रयीसांख्यं योगः पशुपति
मतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने
प्रस्थाने परमिदमदः प
थ्यमिति च रुचीनां वैचि
त्र्यादृजु कुटिलनानापथ
युषां नृणामेको गम्यस्त्व
मसि पयसामर्णव इव ७
टी॥ हे महादेव तीनों तो वेद और

زنادرتیہ بھوت - انی شوباکریاد
بھوون جن نیکھہ پرکرو - یتو مندا
ستوانگ پرتیہ مرور سنشیرت اِمے
۶
ٹیکا
ہے مہادیو یہ جو چودہ بھون ہین کیا پیدا نہین
ہوئے یعنی پیدا ہوئے ہین کیا انکی پیدائش
تمھارے بنا ہے یعنی تمھارے ہی سے
ہے کیا کوئی آدمی انیش پیدا کرسکتا ہے
جگت کو یعنی ایشر ہی کرسکتا ہے اور جو کوئی
تم مین سنشے کرتے ہین کہ یہ پیدائش کسی اور
نے کی ہوگی سو وہ بڑے مورکھ ہین کیونکہ
یہ سب تمھاری ہی پیدا کی ہوئی ہے -
اشلوک
ترئی سانکھیہ نگ جوگہ پشپتی
بیشنومت پربھنے پرستھانے پرمدمدہ
پتھیہ متیچ - رچی نانگ بےچتریادرج
کٹل ناناپتھہ جکھانگ نرنامیکو گمتیہ
استو مسی پے سامرنو اِو
ٹیکا
ہے مہادیو تینون تو بید اور پرکرت پرش
کا نرنے جسمین ہے ایسا سانکھیہ شاستر

प्रकृति पुरुष का निर्णय जिसमें है ऐसा सांख्यशास्त्र और योगशास्त्र जिसमें योगाभ्यास है वह शास्त्र और रुद्रयामल आदि अर्थात् शिवजी का मत और नारद पंचरात्र अर्थात् विष्णु का शास्त्र ये जो जुदे जुदे शास्त्र हैं इन के बीच में अपने २ को अच्छा बताते हैं अनेक प्रकार की रुचि है इस वास्ते सूधे और टेढ़े रास्ते वाले बहुत हैं परंतु ये सब तुम्हीं में पहुंचैंगे कोई सूधे रास्ते से कोई टेढ़े रास्ते से जैसे जितने जल हैं सब समुद्र ही में पहुंचते हैं कोई जल सूधे रास्ते को कोई जल टेढ़े रास्ते को जाते हैं गंगा और नर्मदा सूधे रास्ते होकर समुद्र में मिल जाती हैं और जो नदी हैं वह टेढ़े रास्ते हो गंगा यमुना में मिलकर वेभी समुद्र में मिल जाती हैं जो कि केवल आपही का ध्यान करते हैं वे आप के पास पहुंच जाते हैं जो कोई और देवताओं का ध्यान करते हैं वे सब तुम में और जन्म धार के पहुंचते हैं।७।

मू॥ महोक्षःखट्वांगपर
शुरजिनंभस्मफणिनः
कपालंचेतीयत्तववरदतं

جسمیں جوگ ابھیاس ہے وہ شاستر اور رودر جامل وغیرہ یعنی شیوجی کا مت اور نارد پنچ راتر یعنی بشن کا شاستر یہ جو جدا جدا شاستر ہیں انکے بیچ میں اپنے اپنے کو اچھا بتاتے ہیں انیک پرکار کی رُچ ہے اسواسطے سیدھے اور ٹیڑھے راستے والے بہت ہیں مگر یہ سب پہونچینگے تمہیں میں کوئی سیدھے راستے سے کوئی ٹیڑھے راستے سے جیسے جتنے جل ہیں سب سمندر ہی میں پہونچتے ہیں کوئی جل سیدھے راستہ کو کوئی جل ٹیڑھے راستہ کو جاتے ہیں گنگا اور نربدا سیدھے راستہ سے جا کر سمندر میں مل جاتی ہیں اور اور جو ندی ہیں وہ ٹیڑھے راستہ سے گنگا جمنا میں شامل ہوکر وہ بھی سمندر میں مل جاتی ہیں جو کہ صرف آپکا ہی دھیان کرتے ہیں وہ آپکے پاس پہونچ جاتی ہیں جو کوئی اور دیوتاؤں کا دھیان کرتی ہیں وہ تم میں اور جنم دھارکر پہونچتی ہیں

اشلوک

مہوکشہ کھٹوانگن پرشُر جننگ
بھسم پھنینہ کپالنگ چیتی یت تو

न्त्रोपकरणं सुरास्तां तामृद्धिं
विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां।
नहि स्वात्मारामं विषयमृग
तृष्णा भ्रमयति ॥८॥ टी।

हे महादेव बड़ा तो बैल और खट्वांग नाम हथियार जैसा आदमी के हाड़ों का पिंजर ऐसा हथियार होता है और परशु नाम कुल्हाड़ा और अजिन नाम मृगछाला और भस्म नाम भभूत और फणि नाम सर्प और कपाल है हे वरद तुम्हारी इतनी तो सामग्री है और आपकी दी हुई दौलत को सब देवता वरतते हैं यह आप का प्रताप है कि सामग्री आपकी गरीबों की सी और देना आपका अनन्त है ॥ ८ ॥ ॥ मू ॥

ध्रुवंकश्चित्सर्वंसकलम-
परस्त्वध्रुवमिदं परोध्रौ
व्याध्रौव्येजगतिगदति-
व्यस्तविषये समस्तेप्ये
तस्मिन्पुरमथन तैर्वि-
स्मितइवस्तुवन जिह्रे-

برد تنتروپ کرننگ ۔ سُراستانتا
مر دہنگ بدہ دھت بھوو بھو پر
نہتانگ نہسو اتما رامنگ بشے
مرگ ترشنا بھرمیت ۔

ٹیکا

۸ ہے مہادیو بڑا تو بیل اور کھٹوانگ نام ہتھیار جیسا آدمی کے ہاڑون کا پنجر ایسا ہتھیار ہوتا ہے اور پرسو نام کلہاڑا اور اجن نام مرگ چھالا اور نام بھسم نام بھبھوت اور پھنی نام سرپ اور کپال ہے ہے برد تمھاری اتنی تو ساگری ہے اور آپ کی دولت کو سب دیوتا برتتے ہین یہ آپکا پرتاپ ہے کہ ساگری آپ کی غریبون کی ایسی اور دینا آپ کا بے انتہا ہے ۔

اشلوک

۹
دُھرونگ کشچت سرونگ سکلم پرستو
دُھرومدنگ پرو دُھرو بیادھرو یے
جگت گدت بیست بشئے سمستے پیتسمن
پرمتھن تیر بسمت اوستون جھرے
متوانگ نکمصل تنو درشٹا مکھہ رتا

मि त्वां न खलु ननु धृष्टा मु
खरता ॥ ९ ॥ ॥ टी ॥
हे शांब शिव कोई तो इस जगत को
कहता है कि ध्रुव है अर्थात सत्य
है और कोई कहता है कि अध्रुव है
अर्थात झूठा है और कोई कहता
है कि ध्रुव अध्रुव दोनो है अर्थात
यह संसार सत्य भी है और झूठ भी
है सो इन सब कहने वालों की वा
त को सुन करके बड़ा आश्चर्य मा
नता हूं क्योंकि कोई कुछ कहता
है और कोई कुछ सो हे शिव तुम्हा
री स्तुति करता हुआ मैं लज्जा को
प्राप्त होता हूं क्योंकि मैं तुम्हारी क्या
स्तुति करूंगा जो ये बडे बड़े कहने
वाले हैं उन्हों ने तो पार पाया ही
नहीं मैं तो महा तुच्छ हूं क्या पार
पाऊंगा मैं जो स्तुति करता हूं ए
क ढिठाई सी करता हूं ढीठ वह
होता है कि छटांक होवे और
सेर की रीस करने लगे ॥ ९ ॥

मू ॥ तवैश्वर्यं यत्नाद्य दु
परि विरंचो हरि रधः प
रिच्छेत्तुं याता वनलमनि

ٹیکا

۹ ہے شانب شیو کوئی تو اس جگت کو کہتا ہے
کہ دھرو ہے یعنی ست ہے اور کوئی یہ
کہتا ہے کہ ادھرو ہے یعنی جھوٹھا ہے
اور کوئی یہ کہتا ہے کہ دھرو ادھرو
دونوں ہیں یعنی یہ سنسار ست بھی ہے
اور جھوٹھ بھی ہے سو ان سب کہنے
والونکی بات کو سنکر بڑا اشچرج مانتا
ہوں کیونکہ کوئی کچھ کہتا ہے اور کوئی
کچھ سو ہے شیو تمھاری استت کرتا ہوا
میں لجّا کو پراپت ہوتا ہوں کیونکہ میں
تمھاری استت کیا کرونگا جو یہ بڑے کہنے
والے ہیں اونھوں نے تو پار پایا ہی نہیں
میں تو ناچیز ہوں کیا پار پاؤنگا میں جو
استت کرتا ہوں ایک گستاخی سی کرتا ہوں
ڈھیٹھ وہ ہوتا ہے کہ چھٹانک بھر ہو اور
سیر بھر والے کی ریس کرنے لگے —

اشلوک

توے شرینگ یتنا دیدیر برنچو ہر
ردھ - پرچھتے تنک یاتا ونل منل

लस्कंधवपुषः ततोभ
क्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां
गिरिशयत् स्वयंतस्थेता
भ्यांतवकिमनुवृत्तिर्न
फलति ॥१०॥ ॥टी॥:॥
हेमहादेव तुम्हारे ऐश्वर्य अर्थात्
प्रताप को तौलने के वास्ते बड़े बड़े
यत्न कर के ब्रह्मा तो ऊपर गये औ
र विष्णु नीचे गये तौ भी उसका अं
त न पाया तिस के वास्ते श्रद्धा क
र के तुम्हारी स्तुति करने वाले
जो हरि और ब्रह्मा हैं उनके वा
स्ते तुम आप प्रकट होते भये
अर्थात् दर्शन देते भये हे शिव
तुम्हारी जो अनुवृत्ति नाम से
वा है क्या नहीं फलती अर्थात्
त् फलती है ॥ १० ॥ मू ॥ अ
यत्नादासाद्य त्रिभुवनमवै
रव्यतिकरं दशास्यो यद्बाहू
नभृत रणकंडूपरवशान् ।
शिरः पद्मश्रेणीरचित
चरणांभोरुहबलेः स्थिरा
यास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर

اسکندھ ہو بسہ ۔ تتو بھکت شردھا
بھر گرو گرند بھیانگ گرسیت سو
ینگ تسیتھے تابھیانگ توک من
برتیر نہ پھلت ۔
ٹیکا
ہے مہادیو تمھارے ایشور ج کے تولنے
کے واسطے بڑے بڑے جتن کر کے برہما تو
اوپر گئے اور بشن نیچے گئے تو بھی اوسکا
انت نہ پایا تسکے واسطے سردھا کر کے
تمھاری استت کرنیوالے جو ہر اور برہما
ہیں اونکے واسطے تم آپ پرگھٹ ہوتے
بھئے یعنی درشن دیتے بھئے ہے شیو تمھارے
جو انبرتی نام سیوا ہے کیا نہیں پھلتی ہے
یعنی پھلتی ہے
اشلوک
اینتنا واسا دلیس تربھون مبے
ریتیت کر نگ دشاسیو یدواہو
بھرتان کنڈو پر بشان ۔ شرہ
پدم شرینی رچیت چرنانک بھورہ
بلکیہ استھر ایا ستو د بھکتے استر
پر ہر بس پھورجیت مدنگ ۔

विस्फूर्जितमिदं ॥ ११ ॥

टी ॥ हे महादेव दशानन जो रावण है जिस में बैरी एक नहीं ऐसा जो त्रिलोकी का राज है उस को प्राप्त हो कर के और जो हमेशा युद्ध करा चाहै ऐसी बीस भुजा कि जिस में हमेशा खाज लड़ाई की उठती रहै उन को प्राप्त होता भया और अपने जो शिर हैं उन को कमल बना कर के नजर देता भया है शिव तुम्हारी भक्ति का फल खुला हुआ है क्योंकि देखिये कि रावण को कौन २ फल मिले ॥ ११ ॥ ११ ॥

मू ॥ अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनं बलात् कैलाशे पि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः अलभ्या पातालेप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः १२

टी॥ हे महादेव तुम्हारी सेवा कर के पाया है भुजवन जिस ने

ٹیکا ۱۱

ہے مہادیو دسانن جو راون ہے جسمین بیری ایک نہین ایسا جو ترلوکی کا راج ہے اوسکو پراپت ہو کرکے اور جو ہمیشہ جُدھ کرنا چاہین ایسی بیس بھجا کہ جس مین ہمیشہ کھاج لڑائی کی اوٹھتی رہے اونکو پراپت ہوتا بھیا اور اپنے جو سر ہین اونکو کمل بنا کر دیتا بھیا ہے شیو تمھاری بھکت کا پھل کھلا ہوا ہے کیونکہ دیکھیے راون کو کون کون پھل ملے —

اشلوک ۱۲

اَمُشیہ توَت سیوا سمدھگت سارنگ
بھجبنم بلات کیلاسے پیو
دِدھِوستو بکرمیتہ الَبھیا پاتالے
پیلس چلِتا نگُشٹ شرسِ پرتشٹھا
توَیاسی دھروم پچِتو موہیت
کھلہ —

ٹیکا ۱۲

ہے مہادیو تمھاری سیوا کرکے پایا ہے بھج بل جسنے ایسا جو راون ہے اوسکی

ऐसा जो रावण है इसकी बडाई जो
है पाताल में भी जाती रही क्योंकि
तुम्हारे जो रहने की जगह कैला-
श है उस कैलाश के उखाडने के
वास्ते उसकी जड़ों में दे दिये हैं हाथ
जिसने जब उस के हाथ देने से पर्व-
त हिलने लगा तब तुमने अपने
दाहिने पैर का अंगूठा हिला दि
या जभी उसकी भुजा वहां दब
गई और जितने लोग पाताल
के रहने वाले थे सब हंसने
लगे और कहने लगे कि जो
तुझ से हाथ अपने नहीं निक
लते तो अपने हाथों को कै-
लाश पर्वत की जड़ों में क्यों
दिया था इस तरह उस की शोभा
पाताल में बिगड़ गई ॥ १२ ॥

मू ॥ यदद्धिं सुत्राम्णो वर-
दपरमोच्चैरपि सतीमध
श्चक्रे बाणः परिजनवि
धेयत्रिभुवनः नतच्चि
त्रं तस्मिन्वरिवसितरि
त्वच्चरणयोर्न कस्याप्यु

بڑائی پاتال مین بھی جاتی رہی کیونکہ تمھارے
جو رہنے کی جگہ کیلاس ہے اوس کیلاس
کے اکھاڑنے کے واسطے اوسکی جڑون مین
اپنے ہاتھ دیدیے اوسکے ہاتھ دینے
سے جب پربت ہلنے لگا تب تمنے اپنے
داہنے پانون کا انگوٹھا ہلا دیا جبھی اوسکی
بھجا وہین دب گئی اور جتنے لوگ پاتال
کے رہنے والے تھے سب ہسنے
لگے اور کہنے لگے کہ جو تجھ سے ہاتھ
اپنے نہین نکل سکتے تو اپنے ہاتھون کو
کیلاس پربت کی جڑون مین کیون
دیے تھا اس طرح اوسکی سوبھا
پاتال مین بگڑ گئی -

اشلوک ۱۳

یدردھنگ سوترامنو بردپرمو
چیےرپ ستی مدھش چکرے
بانہ پرجن بدھے یتر بھونہ - نہ
تت چترنگ تسمن برِبس تر توت
چرنیونکسیا پیون نتیے بھوت بتر

न्त्यैभवति शिरसस्त्व
य्यवनतिः ॥१३॥
टी॥ हे महादेव निश्चय करके
जानते जो मनुष्य समर्थवान् अ
र्थात् धनवान होकर अंधा
हो जाता है ॥१३॥

मू॥ अकांडब्रह्मांडक्ष-
यचकितदेवासुरकृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनय
नविषंसंहृतवतः स
कल्माषः कंठे तव न कु
रुते न श्रियमहो विका-
रोपि श्लाघ्यो भुवनभ-
यभंगव्यसनिनः १४

टी॥ हे महादेव जहर के पीने
वाले जो तुम हो तुम्हारे कंठ में
जो सियाही होगई है क्या वह शो-
भा नहीं देती अर्थात् बहुत अच्छी
लगती है क्योंकि बिना समय प्र
लय आई थी उस से असुरों
और देवता दोनों डरे उनको तुम
ने बचाया इस वास्ते वह जो

ستسوپیونتہ ۔

ٹیکا

۱۳
ہے مہادیو نشچے کرکے جانتے جو شخص
سمرتھوان یعنے دھن وان ہوکر اندھا
ہوجاتا ہے ۔

اشلوک

۱۴
اکانڈبرہمانڈکشیہ چکت دیواسُر
کرپا ودھے یسیاسیدیسترینین وکھ
سنگ ہرت وتہ ۔ سکل ماکھ
کنٹھے تون کرتے نسریہ مہو وکارولیش
لاگھیو بھون بھے بھنگ بیسننہ ۔

ٹیکا

۱۴
ہے مہادیو زہر کے پینے والے جو تم ہو سو
تمہارے کنٹھ مین جو سیاہی ہوگئی
ہے کیا وہ سوبھا نہین دیتی نہین بہت
اچھی لگتی ہے کیونکہ بنا سمے پرلے آئی
تھی اوس سے اسُر اور دیوتا دونون
ڈرے سو اون کو تم نے بچایا
اسواسطے وہ جو سیاہی زہر کی ہے

सियाही जहर की है वह बहुत शोभा दे रही है हे महादेव जो पराये दुख को मिटाते हैं उन का अवगुण भी गुण है ॥ १४ ॥

मू ॥ असिद्धार्थानैवक्वचिदपिसदेवासुरनरेनिवर्तन्तेनित्यंजगतिजयिनोयस्यविशिखा:सपश्यन्नीशत्वामितरसुरसाधारणमभूत्स्मरःस्मर्तव्यात्मानहिवशिषुपथ्य:परिभवः ॥ १५ ॥

टी ॥ हे महादेव जिस कामदेव के बाण जगत में खाली फिर के नहीं आते सब को जीत कर आते हैं सो कामदेव तुम को भी और देवताओं के माफिक देखता हुआ दग्ध हो गया है महादेव अच्छे पुरुषों का आदर न करना अच्छा नहीं जो आदर नहीं करते हैं उन का हाल कामदेव का सा होता है ॥ १५ ॥

मू ॥ महीपादाघाताद्व्रज

وہ بہت ہی سوبھاوے رہی ہے ہے مہادیو جو پرائے دُکھ کو مٹاتے ہیں اُنکا اَوگُن بھی گُن ہے ۔

اشلوک

۱۵

اَسِدّھارتھا نَیوَ کوَچِدَپی سدیواسُر نرے نِورتنتے نِتیَنگ جگتِ جَیِنو یسیَ وِشِکھاہ سَپشیَنیش تواُمترسُر سادھارن مبھوت اسمرہ اسمرتَویاتما نہ ہِ وشِشُ پتھیہ پربھوہ ۔

ٹیکا

۱۵

ہے مہادیو جس کامدیو کے بان جگت میں خالی پھر کے نہیں آتے سبکو جیت کر آتے ہیں سو کامدیو تمکو بھی اور دیوتاؤن کے موافق دیکھتا ہوا دگدھ یعنی سوختہ ہوگیا ہے مہادیو اچھے پُرشون کا آدر کرنا اچھا نہیں ہے جو آدر نہیں کرتے ہیں اُنکا احوال کامدیو کا سا ہوتا ہے ۔

اشلوک

مہی پاداگھاتا دبرجت سہسا

तिसहसा संशयपदं पदं
विष्णोर्भ्राम्यद्भुज परिघरुग्ण
ग्रहगणं मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं
यात्यनिभृतजटा ताडि
ततटा जगद्रक्षायै त्वं न
टसि ननु वामैव विभु
ता ॥ १६ ॥ ॥ टी ॥

हे महादेव तुम जो नृत्य करते हो सो जगत् के भले के वास्ते करते हो जगत् तो और उलटा दुख पाता है कैसे कि पृथ्वी जो है सो पैरों की ठोकरों से दुख पाती है और आकाश जो है सो भुजाओं के फिराने से दुख पाता है और स्वर्गलोक जो है वह जटाओं के लगने से दुख पाता है जो कोई यह शंका करै तो उसको यह कहना कि शिवजी के नाचने से जो त्रिलोकी को दुख हुआ तो क्या आश्चर्य है क्योंकि जो बादशाह की सवारी निकलने से जो किसी कुंजडे का टोकरा गिर पडा या किसी की दीवार गिर गई या किसी सवार की टांग टूट गई या कोई घोडा या ऊंट या हाथी गिर

سنسے پدنگ پدنگ بشنور بھرامید
بھج پرگھ رگن گرہ گنناگ مہور
دیو و ستھنگ یاتیئنی بھرت جٹاتا
ڑت تتا جگدرکشایی تونگ نٹس
ننو و امیو وبھوتا ـ

ٹیکا

16

ہے مہادیو تم جو نرت کرتے ہو سو جگت کے بھلے کے واسطے کرتے ہو جگت تو اور اولٹا دُکھ پاتا ہے کیونکہ پرتھی جو ہے سو پیرون کی ٹھوکرون سے دُکھ پاتی ہے اور اسمان جو ہے سو بھجاؤن کے پھرانے سے دُکھ پاتا ہے اور سرگ لوک جو ہین وہ جٹاؤن کے لگنے سے دکھ پاتے ہین اگر کوئی ایسا اعتراض کرے تو اوسکو یہ کہنا کہ شیوجی کے ناچنے سے اگر تریلوکی کو دُکھ ہوا تو کیا اشتچرج ہے کیونکہ اگر بادشاہ کی سواری نکلنے سے کسی کنجڑے کا ٹوکرا گر پڑا یا کسی کی دیوار گر گئی یا کسی سوار کی ٹانگ ٹوٹ گئی یا کوئی گھوڑا یا اونٹ یا ہاتھی گر گر

कर मरगया तो ऐसा कारखाने वालोंके अर्थात् जोसबसे वड़े होते हैं जो ऐसा नुकसान होगया तो क्या इस बातका आश्चर्य है १६

मू ॥ वियद्व्यापीतारागण गुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहोवारांयः पृषतलघु दृष्टः शिरसिते जगद्दीपाकारं जलधिवलयंतेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयंधृ तमहिदिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥ ॥ टीका ॥

हे महादेव जलोंका जो प्रवाह गंगाजी तुम्हारे सिर के ऊपर वूंद से छोटा देखा सो कैसा प्रवाह कि आकाश में व्याप्त होरहा है फेर कैसा है कि तारागण करके मिले हुये जो फेन अर्थात् झाग उसफेन कर के है रुचि तुम्हारी और फेर कैसा प्रवाह जिनकर के जगत्दीपवाला होगया तिसकरके तुम्हाराजोशरीरहैवड़ी महिमावाला है और वड़े प्रताप

مرگیا تو ایسے کارخانہ والون کے یعنی جو سب سے بڑے ہوتے ہین جو ایسا نقصان ہوگیا تو اس بات کا آشچرج کیا ہے ۔

۱۷ اشلوک

بیدبیاپی تاراگن گنت پھینو دگم رچہ پرباہو بارانگ یہ پرشت لگھو درشٹہ سرستے جگدّویپا کارنگ جلدھ بل ینگتینہ کرت متیہ نے نیوونّے ینگ دھرت مہیہ دیبینگ تو بپہ

۱۷ ٹیکا

ہے مہادیو جلون کا جو پرواہ گنگاجی سو تمہارے سر کے اوپر بوند سے بھی چھوٹا دیکھا کیسا پرواہ کہ آکاس مین بیاپت ہو رہا ہے پھر کیسا کہ تاراگن کر کے ملی ہوئی جو پھین یعنی جھاگ وس پھین کر کے ہے رچ تمہاری اور پھر کیسا پرواہ کہ جس کر کے جگت دیپ والا ہو گیا تس کر کے تمہارا جو سریر ہے بڑی مہما والا ہے اور بڑے پرتاپ والا ہے

वाले हैं ॥ १७ ॥

मू ॥ रथः क्षोणी यंता शत
धृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथांगे
चंद्रार्कौ रथचरणपाणिः
शर इति दिधक्षोस्ते को
यं त्रिपुरतृणमाडंबरवि
धिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न ख
लु परतंत्राः प्रभुधियः १८

टी ॥ हे महादेव पृथ्वी को तुम
ने रथ बनाया और हांकने वा
ला ब्रह्मा बनाया और हिमाच
ल पर्वत को धनुष बनाया और
चंद्र सूर्य को रथ के पहिये बना
ये और विष्णु को तीर बनाया त्रि
पुर दैत्य घास के तिनके के ब
राबर उसके फूंकने के वास्ते
इतनी बड़ी सामग्री वह तो के
वल तुम्हारी दृष्टि मात्र से दग्ध
हो सक्ता था परंतु बड़े लोग जो
होते हैं उनकी खुशी में जो आ
ता है सोई करते हैं ॥ १८ ॥

मू ॥ हरिस्ते साहस्रं क
मलबलिमाधाय पदयो

اشلوک

۱۸ رتھاکشونی یتناشت دھرتیرگیندرو
دھنر تھور تھانگے چنبدرارکو رتھ
چرن پانہ شرات دِدھکشوستے
کویںگ ترپرترن ماڈمبر بِد
بِدھیے گری ڈنتیو نکھل پرتنترا پربھو
دھیہ ـ

ٹیکا

۱۸ ہے مہادیو پرتھی کو تمنے تو رتھ بنایا اور
ہانکنے والا برہما بنایا اور ہماچل کو دھنکھ
بنایا اور چندرمان اور سورج کو رتھ کے
پہیے بنایا اور بشن کو تیر بنایا ترپردیت
گھاس کے تنکے کے برابر اوسکے پھونکنے
کے واسطے اتنی بڑی سامگری وہ تو کیول
تمھاری درشٹ ماتر سے دگدھ یعنی سوخت
ہو سکتا تھا مگر خیر بڑے لوگ جو ہوتے
ہیں اونکی خوشی مین جو آتا ہے سوئی
کرتے ہیں ـ

اشلوک

ہرستے ساہستر نگ کمل بلادھا سے
پدیو ریدیے کو نے تسمین بنج مد

यैरेकोनेतस्मिन्निजमु-
द्दहरन्नेत्रकमलं गतोभ
क्त्युद्रेकः परिणतिमसौ
चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षा
यै त्रिपुरहर जागर्ति जग
तां ॥ १९ ॥ ॥ टी ॥

हे महादेव विष्णु जो हैं तुमको
हजार कमल रोज़ चढ़ाया कर
ते हैं उनकी परीक्षा लेने के वास्ते
एक पुष्प को ले लिया क्योंकि दे
खें कि इन का नेम कैसा है तब
विष्णु ने देखा कि हमारा हमेशा
का नेम टूटा अब क्या करना चा
हिये खैर अपना एक नेत्र ही च
ढा कर अपना नेम पूरा हजार क
मल का करें देंगे तब यह विष्णु
की बड़ी भक्ति को देख कर तुम
ने त्रिलोकी की रक्षा करने के वास्ते
सुदर्शन चक्र विष्णु को दिया सो
वह जो चक्र है आज तक विष्णु के
हाथ में वर्तमान है ॥ १९ ॥

मू ॥ क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्व
मसि फलयोगे क्रतुम-

ہرن نیتر کملنگ گتو بھکتیودریکہ
پرن تمسو چکر بپکھاتر یاناتگ رکشا
یئے تریپر ہر جاگرت جگتانگ -

ٹیکا

ہے مہادیو بشن جو ہیں تمکو ہزار کنول
ہمیشہ چڑھایا کرتے ہیں اونکی پرکشا لینے
کے واسطے تمنے ایک پشپ کو لے لیا کیونکہ
دیکھیں کہ انکا نیم کیسا ہے تب بشن نے دیکھا
کہ ہمارا ہمیشہ کا نیم ٹوٹا اب کیا کرنا چاہیے
خیر اپنا ایک نیتر ہی چڑھا کر کے اپنا نیم پورا
ہزار کنول کا کر دینگے تب یہ بشن کی بڑی
بھاری بھکت کو دیکھ کر تم نے ترلوکی کی
رچھیا کرنے کے واسطے سودرشن چکر
اونکو دیا سو وہ چکر آج تک بشن کے
ہاتھ میں موجود ہے -

اشلوک

کرتو سپتے جاگرستومس پھل جوگے
کرت متانگ کو کرم پردھونسنگ
پھلت پرشا رادھن مرتے

तांक्ककर्मप्रध्वस्तंफलति
पुरुषाराधनमृते अत-
स्त्वांसंप्रेक्ष्य क्रतुषु फ-
लदानप्रतिभुवंश्रुतौ
श्रद्धांवध्वादृढपरिकरः
कर्म्मसुजनः ॥ २० ॥

टी ॥ हे महादेव जब यज्ञ पूरा हो
जाता है तब यज्ञ करने वालों
को फल तुम्ही देते हो और तु-
म्हारी सेवा के बिना पूरा हो गया
ऐसा जो कर्म है सो फल नहीं दे
सक्ता इस वास्ते जितने कर्म क
रने वाले हैं तुम को देखकर कि
शिवजी सब कर्मों के फल देने
वाले वर्त्तमान बैठे हैं यह समझ
कर सब कर्म करने को लग
रहे हैं ॥ २० ॥

मू ॥ क्रियादक्षोदक्षः क्र-
तुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणामार्त्विज्यं शर-
णादसदस्याः सुरगणाः
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्र-
तुषु फलदानव्यस

اَتَسْتُوانگ سُوپریکشیہ کرتُکھشُو
پھلدان پرت بھُونگ سروتو
سردھانگ بدھوادڑھ پریکرہ کرم
سجنہ

ٹیکا

ہے مہادیو جب جگ پورا ہو جاتا ہے
تب جگ کرنے والوں کو پھل تم ہی
دیتے ہو اور جو کرم تمھاری سیوا
کے بنا پورا ہو گیا ہے وہ پھل نہیں
دے سکتا اسواسطے جتنے کرم کرنیوالے
ہیں تم کو یہ دیکھ کر کہ شیوجی سب کرموں
کے پھل دینے والے موجود بیٹھے ہیں
یہ سمجھ کر سب کرم کرنے کو لگ
رہے ہیں

اشلوک

کریا دکشو دکشہ کرت پتیر دھیشہ
استنبھرتا مرکھینا مارتوجینگ
شرن دسدسیاہ سرگناہ
کرت بھرنگس استوتہ کرتش

निनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धावि-
धुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥ ॥ टी ॥

हे महादेव यज्ञ करनेवाला तो दक्ष सो कैसा दक्ष कर्म करने में बड़ा बुद्धिमान यज्ञ कराने वाले सब ऋषीश्वर और यज्ञ के सहायक सब देवता परंतु उस दक्ष की तुम ही में श्रद्धा नथी इतनी ही कसर थी सो यज्ञ भ्रष्ट होगया उसके यहां सब कुछ था परंतु केवल तुम्हारी कृपा नथी उसका यज्ञ विध्वंस होगया क्योंकि यज्ञ के फल देने वाले तो तुम सो तुम्ही में उसकी श्रद्धा न रहे तो वह यज्ञ कहां से संपूर्ण हो यज्ञ करने वाला भी बहुत अच्छा था करवाने वाले भी बहुत अच्छे थे परंतु बिना कृपा तुम्हारी के कुछ किसी से न हो सका यज्ञ भ्रष्ट हो गया ।२१। मू ।

प्रजानाथं नाथ प्रसभम
भिकं स्वां दुहितरं गतं रो-
हिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य
वपुषा धनुष्पाणेर्यातं
दिवमपि सपत्राकृतम-

پھل ابنیسہ سننو دھرونگ کرتہ شردھا
بدھر مسبھ چاراے ہمکھاہ -

ٹیکا

ہے مہادیو جگ کرنے والا تو دکش سو کیسا دکش کرم کرنے مین بڑا ہوشیار اور جگ کرانے والے سب رکھیشر اور جگ کے مددگار سب دیوتا مگر اوس دکش کی تم ہی مین سردھا نہ تھی اتنی ہی کسر تھی اوسکی جگ بھرشٹ ہو گئی اوسکے یہان سب کچھ تھا لیکن صرف تمھاری کرپا نہ تھی اوسکی جگ بدھونس ہو گئی کیونکہ جگ کے پھل دینے والے تو تم سو تمھی مین اوسکی سردھا نہو تو وہ جگ کہان سے سمپورن ہو جگ کرنے والا بھی اچھا تھا اور جگ کرانے والے بھی بہت اچھے تھے لیکن تمھاری کرپا بنا کچھ کسی سے نہو سکا جگ بھرشٹ ہو گئی -

اشلوک

پرجاناتھن ناتھ پرسبھ مبھ
کن سواں دہترن گتن روہد

मुं त्रसंतं तेद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।२२।

टी॰ हे नाथ तुम्हारा जो बाण है ब्रह्मा को आज तक नहीं छोड़ता कैसा ब्रह्मा है कि अपने शरीर को त्याग कर और हिरन के शरीर को धारण करके आकाश में जा बैठा और फेर कैसा है कि कामदेव जिस को बाधा कर रहा है और फेर कैसा है कि अपनी जो बेटी है उस के साथ रमण करने की इच्छा है जिस की कैसी बेटी है कि वास्ते बचने के हिरन का स्वरूप को धार लिया है जिसने और ब्रह्मा भी कैसा है कि उस के साथ रमण करने को हिरन हो गया और कहने लगा कि जो तू हिरनी हो गई है तो मैं भी हिरन हो कर तुझ को प्राप्त हो जाऊंगा ऐसी इच्छा है जिस की तब हिरनी आकाश की ओर देख कर कहने लगी कि कोई ऊपर है या नहीं है नाथ तुम कैसे हो कि धनुष हाथ में जिन के ब्रह्मा कैसा है कि महादेव का तीर

بجتو یاگتں سے رہیں مرکیشیسہ بپوکھہ
دھنکھپانیر یاتنگ دیومپ سپتّرا
کرت ممنگ ترسنگ تنگ تیدیاپی
تیجت نہ مرگ بیادھ رپھسہ

ٹیکا

ہے ناتھ تمھارا جو بان ہے برہما کو آج تک نہیں چھوڑتا کیسا برہما ہے کہ اپنے سریر کو تیاگ کرکے اور ہرن کے سریر کو دھارن کرکے آسمان مین جا بیٹھا اور پھر کیسا ہے کہ کام جسکو بادھا کر رہا ہے اور پھر کیسا ہے کہ اپنی جو بیٹی ہے اوسکے ساتھ رمن کرنیکی اچھا کرتا ہے جسکی بیٹی کیسی ہے کہ واسطے بچنے اپنے کے ہرنی کا سوروپ دھار لیا ہے اور برہما بھی کیسا ہے کہ اوسکے ساتھ رمن کرنیکو ہرن ہو گیا اور کہنے لگا کہ جو تو ہرنی ہو گئی ہے تو مین بھی ہرن ہو کر تجھکو پراپت ہو جاؤنگا ایسی اچھا ہے جسکی تب ہرنی آسمان کی طرف دیکھکر کہنے لگی کہ کوئی اوپر ہے یا نہیں ہے ناتھ تم کیسے ہو کہ دھنکھ ہے ہاتھ مین جنکے برہما کیسا ہے کہ مہادیو کا تیر ایسے

ऐसे खोटे कर्म की इच्छा से जिस
के बदन को फोड़ कर साफ निक-
ल गया और फेर कैसा है कि त्रास
को प्राप्त हो रहा है तौभी तुम्हारा बा-
ण आज तक उसके पीछे लग रहा
है हे महादेव ब्रह्मा को तो आज त-
क तुम ऐसे नजर आते हो कि मानो
शिव जी मेरे पीछे तीर लिये खड़े हैं
सो हे शिव संध्या नाम करके ब्रह्मा
की जो बेटी है उसकी फरयाद
तुमने सुन कर यह सजा ब्रह्मा
को दी ॥२२॥ ॥ मू ॥

स्वलावण्याशंसाधृत
धनुषमन्हाय तृणवत
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन
पुष्पायुधमपि यदिस्त्रै-
णं देवी यमनिरत देहार्द्धघ
टनादवैति त्वामद्धा बतव
रदमुग्धा युवतयः ॥२३॥

टी ॥ हे महादेव देवी जो पार्वती हैं
तुम को आधे अंग में बैठाने से य-
ह जानती हैं कि शिवजी का मी

کھوٹے کرم کی اچھا سے اوسکے بدن کو توڑ کر
صاف نکل گیا اور پھر کیسا ہے کہ تراس کو پراپت
ہو رہا ہے تو بھی تمھارا بان آج تک اوسکی پیچھے
لگ رہا ہے مہادیو برہما کو تو آج تک تم ایسے
نظر آتے ہو کہ گویا شیوجی اوسکے پیچھے تیر لئے
کھڑے ہیں سو ہے شیو سندھیا نام کر کے
جو برہما کی بیٹی ہے اوسکی فریاد تمنے سنکر
یہ سزا برہما کو دی ۔

اشلوک ۲۳

سولاونیاشنسا دھرت دھنکھ
منہائے ترن وت پرا پلشٹنگ
درشٹوا پرمتھن پشپایدھ مپ
یدھسترے ننگ دیوی یم نرت
دیہار دھ گھٹنا دوے تو امدھا
وت بردمگدھا یوتیہہ ۔

ٹیکا ۲۳

ہے مہادیو دیبی جو پاربتی ہیں تمکو آدھے انگ
میں بٹھانے سے یہ جانتی ہیں کہ شیوجی کا بھی

मन स्त्रियों में है सो मुनासिब जा
नती हैं क्योंकि स्त्री जो होती हैं अज्ञा
न होती हैं क्योंकि जो ऐसा उलटा
न जानें तो उनको अज्ञान कौन
कहे इस वास्ते तुमको जो स्त्री आ-
सक्त जानती हैं सो मुनासिब है
क्योंकि तुमने उनके अगाड़ी
कामदेव को घास की तरह फूंक
दिया और तौभी तुमको जानती
हैं कि ऐसे हैं जब भी तुमको कामी
जानती हैं और कैसा कामदेव है कि
पार्वती की सुंदरता करके शिवजी
के जीतने की इच्छा है जिसकी —
ऐसे कामदेव को तुमने पार्वती के
सन्मुख घास की तरह फूंक दिया
सो यह बात देख कर भी स्त्री तु
म को अपने वसी भूत जानती है
सो जानें जभी तो अज्ञान कह
लाती हैं ॥ २३ ॥ ॥ मू ॥

स्मशानेष्वाक्रीडास्स्मरह
रपिशाचाः सहचराश्चिता
भस्मालेपः स्रगपिनृकरो
टीपरिकरः अमंगल्यं

ہیں استریوں میں ہے سو مناسب جانتی
ہیں کیونکہ استری جو ہوتی ہیں اگیان ہوتی
ہیں کیونکہ جو ایسا اولٹا نہ جانیں تو اونکو
اگیان کون کہے اسواسطے تمکو جو استری
پر آشکت جانتی ہیں سو مناسب ہے کیونکہ
تمنے اونکے اگاڑی کامدیو کو گھاس کی
طرح پھونک دیا اور توبھی تمکو جانتی ہیں
کہ ایسے ہیں جب بھی تمکو کامی جانتی ہیں
اور کیسا کامدیو ہے کہ پاربتی کی سندرتا
کرکے شیوجی کے جیتنے کی اچھا ہے جسکی
ایسے کامدیو کو تمنے پاربتی کے اگاڑی
گھاس کی طرح پھونک دیا سو یہ بات
دیکھہ کربھی استری تمکو اپنے بسی بھوت
جانتی ہیں سو جانیں جب ہی تو اگیان
کہلاتی ہیں ۔

اشلوک

۲۴
اشمسانیشو اکریڑا سمرہر پشاچا
سہچر اشچتا بھسما لیپا سرگپ
نرکروٹی پرکرہ ۔ امنگلینگ

शीलंतवभवतुनामैवम
खिलं तथापिस्मर्तॄणांव
रदपरमंमंगलमसि ।२४।

टी॥हेमहादेवमसानमें तोआप
कारहना औरपिशाच तुम्हारीफौ-
जमेंरहते हैंऔर चिताभस्मको
लगाते हो औरभक्तों के मुंडों
की मालागले मेंपहिरते हो यहजि
तना आपकासाज है जो देखनेमें
मंगलनहीं है परंतुजो तुम्हारेना
म लेनेवाले हैं उनको यहसाज
परम मंगल होजाता है ॥ २४॥

मू॥मनःप्रत्यक्चित्तेसविध
मविधायात्तमरुतःप्रहृष्य
द्रोमाणःप्रमदसलिलोत्सं
गितदृशःयदालोक्याह्लादंहृद
इवनिमज्यामृतमयेदधत्य
न्तस्तत्त्वंकिमपियमिन
स्तत्किलभवान् ॥ २५॥

टी॥ हेमहादेव योगीजनमनको
समाधिमें लगाकर जौनसेतत्व
को देखते हैं वहतत्वतुमहीहो यो-
गीजन कैसे हैं कि रोकलिये हैं पवन
जिन्होंने फेर कैसे हैं कि आनन्द के
जलमें भीगरहे हैं नेत्र जिनके फेर

شیلنگ توبھوتو نامیو مکھلنگ
تتھاپ سمرتری نانگ بردپرمنگ
منگل مس ۔

ٹیکا

٢٤
ہے مہادیو مسان مین تو آپکا رہنا اور پشاچ
تمہاری فوج مین رہتے ہین اور چتا بھسم
کو لگاتے ہو اور بھگتون کے منڈون کی
مالا گلے مین پہرتے ہو یہ جتنا آپکا ساج ہے
اگرچہ دیکھنے مین منگل نہین ہے لیکن جو
تمہارے نام لینے والے ہین اونکو یہ ساج
پرم منگل ہوجاتا ہے ۔ اشلوک
منہ پرتیک چتی سودھ مودھا یات
مرتہ پرہرکھہ دروماہ پرمد سلیلوت
سنگت درشہ ۔ یدالوکیا لھادنگ ہرد
ایو نمجیامرت مے دھتنگ تتونگ کمپ
یم نسنتت کل بھوان ۔

ٹیکا

ہے مہادیو جوگی جن من کو سمادھ مین لگاکر
جون سے تت کو دیکھتے ہین وہ تت تمھی ہو جوگی
جن کیسے ہین کہ جنھون نے پون روک لئی ہین
پھر کیسے ہین کہ آنند کی جل سی بھیگ رہی ہین نیتر جنکے

कैसे हैं कि आनंद के समुद्र में
गोता मार रहे हैं ॥ २५ ॥

मू ॥ त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्व
मसि पवनस्त्वं हुतवह
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु
धरणिरात्मा त्वमिति च
। परिछिन्नामेवं त्वयि प
रिणता बिभ्रति गिरं न वि
द्मस्तत्तत्त्वं वयमिह हि
यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥

टी ॥ हे महादेव तुम्हीं तो सूर्य हो
और तुम्हीं तो चंद्रमा हो और तु
म्ही पवन हो और तुम्ही अग्नि
हो तुम्ही जल हो और तुम्ही आ
काश हो और तुम्ही पृथ्वी हो
और तुम्ही आत्मा हो यह तुम्हा
री सब मूर्ति हैं खैर कहने वालों ने य
ह गिनती करके कहा सो कहा करें प
रन्तु मेरी बुद्धि में तो यह आता है कि जो
चीज है और उसमें तुम नहीं हो तो व
ह चीज ही नहीं है अर्थात तात्पर्य यह
कि जितनी चीज हैं सब तुम्ही हो तुम्हा
रे सिवा दूसरी कोई नहीं है ॥ २६ ॥

پھر کیسے ہیں کہ آنند کے سمندر میں غوطہ مار
رہے ہیں —

اشلوک ۲۶

تومرکستونگ سوستوم سسی پو
نستونگ ہت وہ ستوماپستونگ
بیوم ستومہ دھرن راتما تومتیچ —
پرچھنا میونگ تویی پرنتا بھرت
گرنگ نہ بدم استت تتونگ
ویمہہ تو یتونگ نہ بھوس —

ٹیکا ۲۶

ہے مہادیو تمھی تو سورج ہو اور تم ہی
چندرماں ہو اور تمھی پون ہو اور تمھی اگن
ہو اور تمھی جل اور تمھی آکاس ہو اور تمھی
پرتھوی ہو اور تمھی آتما ہو یہ سب تمہاری
مورت ہیں خیر کہنے والوں نے یہ گنتی کرکے
کہا سو کہا کریں مگر میری بدھ میں تو یہ آتا
ہے کہ جو چیز ہے اور اس میں تم نہیں ہو تو وہ
چیز ہی نہیں ہے یعنی مطلب یہ ہے کہ جتنی چیزیں ہیں
سب تمھی ہو تمہارے سوا دوسری کوئی نہیں ہے

मू ॥ त्रयींतिस्रोवृत्तीस्त्रिभुवनमथोत्रीनपिसुरानकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति तुरीयं तेधामध्वनिभिरवरुंधानमणुभिः समस्तंव्यस्तं त्वांशरणदगृणात्योमिति पदं ॥ २७ ॥ ॥ टी ॥

हे शिव ॐकार जो अक्षर है सो तीनों मात्रा अकार उकार मकार मिल कर और जुदा जुदा भी होकर तुम्ही को गावता है क्या उन मात्राओं का अर्थ है कि तीन तो वेद और तीन वृत्ती अर्थात् जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति और तीनों लोक और तीन ही देवता अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश फेर कैसा है यह ॐकार कि बारीक बारीक जो अपनी धुनि है अर्थात नाद जो अन्दर शरीर में है उस शब्द करके तुम्हारे ही धाम को कहता है और फेर कैसा है कि विकारों से अर्थात माया से परे है ॥ २७ ॥

اشلوک ٢٧

تریٖن تِسرو ورتیٖس تربھون متھو
تری نپ سُران اکارآدیٖیر ورنے استِر
بھِر بھِدھ دھتیرن بکرت - تُریٖ یَنتے
دھام دھون بھِر برنگ دھان منو
بھِس سمست بیست تو اشرند گرناتیو
متِ پدنگ -

ٹیکا ٢٧

ہے شیو اونکار جو اچھر ہے سو تینون ماترا اکار اُکار مکار مِلکر اور جدا جدا بھی ہوکر تمھی کو گاوتا ہے کیا اون ماتراؤن کا ارتھ ہے کہ تین تو بید اور تین برت یعنی جاگرت اور سُپن اور سکھپت اور تینون لوک اور تین ہی دیوتا یعنی برہما بشن مہیش پھر کیسا ہے یہ اونکار کہ باریک جو اوسکی دھن ہے یعنی ناد جو شبد سریر میں ہے اوس شبد کرکے تمھارے ہی دھام کو کہتا ہے اور پھر کیسا ہے کہ بکارون سے یعنی مایا سے پرے ہے -

मू ॥ भवःशर्वोरुद्रःपशुप
तिरथोग्रःसहमहांस्तथाभी
मेशानाविति यदभिधाना
ष्टकमिदं अमुष्मिनप्रत्ये
कंप्रविचरतिदेवश्रुतिरपि
प्रियायास्मैधाम्नेप्रणिहि
तनमस्योस्मिभवते ।२८।

टी ॥ हे शिव तुम्हारे जो छंटे हुये
नाम हैं वह कौन से हैं भव शर्व, रु
द्र, पशुपति, उग्र, महान, भीम, ई
शान, ये आठ नाम हैं इनमें हमेशा
वेद भी विचरता है अर्थात गावता
है यह जो तुम्हारा धाम है नाम
रूपी मैं भी इसको हमेशा नमस्का
र करता हूं ॥ २८ ॥

मू ॥ नमोनेदिष्ठायप्रियद
वदविष्ठायचनमोनमः क्षो
दिष्ठायस्मरहरमहिष्ठायच
नमः नमोवर्षिष्ठायत्रिन
यनयविष्ठायचनमोनमः
सर्वस्मैतेतदिदमितिशर्वा
यचनमः ॥ २९ ॥ २९ ॥

اشلوک

۲۸
بھوہ شروو رودرہ پشپتی رتھوگرہ
سہ مہانگ ستتھا بھیم شانا بت
یدبھدھا ناشٹک مدنگ اُمُشمن
پرتیے کنگ پربچرتی دیو شرت
رپ پریا یاسمے دھامنے پرنا ہت
نمسیوسم بھوتے -

ٹیکا

۲۸
ہے شیو تمھارے جو چھٹے ہوئے نام ہیں
وہ کون سے ہیں بھو سرب رودر پشپت
اگرہ مہان بھیم ایشان یہ آٹھ نام ہیں
ان میں ہمیشہ بید بھی بچرتا ہے یعنی گاتا ہے
یہ جو تمھارا دھام ہے نام روپی میں بھی
ہمیشہ نمسکار کرتا ہوں

اشلوک

نمو نے دشٹاے پریہ دبر دشٹاے
نمو نمہ کشودشٹاے اسمر ہر مہشٹاے
نمو نمہ - نمو برکھشٹاے ترینن جو
شٹاے نمو نمہ سربسمی تے تدت
مت سرباے نمو نمہ -

टी॥ हे महादेव तुम्ही तो नजदीक हो और तुम्ही दूर हो तुम्ही सूक्ष्म हो और बड़े हो तुम्ही जवान हो तुम्ही बूढ़े हो अर्थात सब रूप तुम्ही हो तुम को नमस्कार है ॥२६॥ ॥मू॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौभ
वायनमोनमः प्रबलत
मसे तत्संहारे हरायन
मोनमः जनसुखकृते
सत्योत्पत्तौ मृडायनमो
नमः प्रमहसिपदे निस्त्रै
गुराये शिवायनमोनमः

टी॥ हे महादेव बहुत सा है रजोगुण तुम को ऐसे जो विश्व के पैदा करने वाले भवरूप हो तुम को नमस्कार है और बड़ा है तमोगुण तुम को ऐसे जो तुम संहार करने वाले हो तुम को नमस्कार है और बहुत सा है सतोगुण जिन को ऐसे जो सुख देने वाले हो तुम को नमस्कार है और बड़ा है स्थान तुम्हारा ऐसे जो तुम

ٹیکا

ہے مہادیو تمھی تو نزدیک ہو اور تمھی دور ہو تمھی سوکشم ہو تمھی بڑے ہو تمھی جوان ہو تمھی بوڑھے ہو یعنی سب رُوپ تمھی ہو تمکو نمسکار ہے ۔

اشلوک

بہل رجسے بشوتپتّو بھوایے
نمونمہ پربل تمسے تت سنگھارے
ہرایے نمونمہ ۔ جن سُکھہ کرتے
ستوتپتّو مرڈایے نمونمہ پرم
ہس پدے نستری گُنے شیوایے
نمونمہ ۔

ٹیکا

ہے مہادیو بہت سا ہے رجوگُن تمکو ایسے جو بشو کے پیدا کرنیوالے بھورُوپ ہو تمکو نمسکار ہے اور بڑا ہے تموگُن تمکو ایسے جو سنگھار کرنیوالے تم ہو تمکو نمسکار ہے اور بہت سا ہے ستوگُن تمکو ایسے جو سُکھہ دینے والے ہو تمکو نمسکار ہے اور بڑا ہے استھان تمھارا ایسے جو تُم

तीनैं गुणों से परे हो तुम को न-
मस्कार है ॥ ३० ॥ ॥ मू ॥

कृशपरिणतिचेतः क्लेशव-
श्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसी-
मोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममंदी कृत्य
मां भक्तिराधाद्वरद चरण-
योस्ते वाक्यपुष्पोपहा-
रं ॥ ३१ ॥ ॥ टी ॥

हे महादेव मेरी जो भक्ति है (वा-
क्य पुष्पोपहारम्) अर्थात् व-
चनरूपी जो पुष्पों की माला है
तुम्हारे चरणों में चढ़ाती भई कि
मेरा दुबला चित्त कहां और शि-
व जी का ऐश्वर्य अर्थात् प्रताप
कहां इस भय में मेरा जो चित्त हैरा
न हो रहा है उस को आनंद अर्थात् सा-
वधान करके चढ़ावती भई । ३१ ।

मू ॥ असितगिरिसमं स्या-
त्कज्जलं सिंधुपात्रे सुरतरु
वरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी

تینوں گنوں سے پرے ہو تم کو نمسکار ہے

اشلوک ۳۱

کرش پرنہت چیتہ کلیش بسینگ
کو چیدنگ کو چیتو گن سیمول لنگھنی
ششو ورِدّھ - اِت چکِتم مندی
کرتیہ مانگ بھکت رادھا دُورد
چرنیو ستے باکیہ پشپو پہارنگ -

ٹیکا ۳۱

ہے مہادیو میری جو بھکت ہے باکیہ پشپو
پہارم اُدھات یعنی بچن روپی جو پشپون
کی مالا ہے تمہارے چرنون مین چڑھالی
ہے کہ میرا دبلا چت کہان اور شیو جی
کا ایشورج یعنے پرتاپ کہان اس
بھے مین میرا جو چت حیران ہو رہا ہے اوسکو
آنند یعنی ساودھان کرکے چڑھاتی ہے -

اشلوک ۳۲

اسِت گِر سمسیات کجلنگ سندھ
پاترے سرترو رساکھا لیکھنی پتر
مُوروی لکھت یدگرہی اواسا ردا

लिखति यदि गृहीत्वाशा-
रदासर्वकालंतदपितव
गुणनामीशपारंनया-
ति ॥ ३२॥

टी ॥ हे महादेव जिनने काले प-
र्वत हैं वह तो हुये सियाही और
समुद्र हुआ पात्र अर्थात् दवात
और कल्प वृक्ष का टहना हुआ
लेखनी अर्थात् कलम और पृथ्वी
हुई कागज़ और सरस्वती आप बै-
ठी लिखने वाली सो कैसी कि तमा-
म दिन और रात लिखती हुई परं तु-
म्हारे गुणों का अंत नहीं मिला । ३२।

मू ॥ असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चित
स्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहि-
म्नो निर्गुणस्येश्वरस्य सक-
ल गुण वरिष्ठः पुष्पदन्ताभि-
धानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तो-
त्रमेतच्चकार ॥ ३३॥

टी ॥ हे महादेव असुर और देवता
और मुनि इन्होंने तुमको पूजा
और तुम्हारी स्तुति की ऐसे जो

سرب کالنگ تدپ تو گن
ناعیش پارنگ نجات ۔

ٹیکا

۳۲

ہے مہادیو جتنے کالے پربت ہیں وہ تو
ہوئے سیاہی اور سمندر ہوا پاتر یعنی دوات
اور کلپ برچھ کا ٹہنا ہوا لیکھنی یعنے قلم
اور پرتھی ہوئی کاغذ اور سرسوتی آپ
بیٹھی لکھنے والی سو کس طرح کہ تمام دن
اور رات لکھنے لگی تو بھی تمھارے گنون
کا انت نہیں ملا ۔

اشلوک

۳۳

اسر سر منیندری رچت سیند
مولے گرتھت گن مہمنو نرگنسیے
شوریسیہ سکل گن برشٹہ پشپ
دنتا بھدھانو رچر ملگھو برتیہ
استو ترمیے تت چکار ۔

ٹیکا

۳۳

ہے مہادیو اسر اور دیوتا اور منی لوگون
نے تمکو پوجا اور تمھاری استت کی ایسے جو

तुम निर्गुण ईश्वर हो तुम्हारे स्तोत्र को वड़े वड़े श्लोकों करके पुष्पदंत करता भया सो कैसा पुष्पदंत है कि सकल गुणों करके शोभा को प्राप्त होरहा है ॥ ३३

मू॥ अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यः सदात्मा प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥ टी॥

हे भक्तो यह जो मैंने शिवजी का स्तोत्र बनाया है सो यह रोज के रोज शिवजी के सुनाने के लायक है जो इसको परमभक्ति करके और शुद्धचित्त करके पढ़ेगा तो शिवलोक को जायगा और शिवजी खास उसको अपनी बराबर समझैंगे और बहुत धन होगा और जगत में कीर्ति अधिक होगी और देवता लोग उसकी स्तुति करैंगे ॥ ३५

تم نرگن ایشور ہو تمہارے استوتر کو بڑے بڑے اشلوکوں کرکے پشپ دنت کرتا ہوا کیسا پشپ دنت ہے کہ سکل گنوں کرکے سوبھا کو پراپت ہو رہا ہے -

اشلوک

اہر ہر نو دینگ دھورجٹیہ استوتر میتت پٹھت پرم بھکتیا سدھ چتہ پومانیہ سبھوت شیو لوکے ردر تلیہ سدا تما پرچر تر دھنا یہ پتروان کیرت مانشچ -

ٹیکا

ہے بھکتو یہ جو مین نے شیوجی کا استوتر بنایا ہے سو یہ روز روز شیوجی کے سنانے کے لائق ہے جو اسکو پرم بھکت کرکے اور سدھ چیت کرکے پڑھیگا تو شیو لوک کو جایگا اور شیوجی خاص اوسکو اپنے برابر سمجھینگے اور بہت دھن ہوگا اور عمر دراز ہوگی اور جگت مین کیرت زیادہ ہوگی اور دیوتا لوگ اوسکی استت کرینگے

मू ॥ दीक्षा दानं तपस्तीर्थं होमयज्ञादिकाः क्रियाः महिम्नः स्तवपाठस्य कलांनार्हंति षोडशीं । ३५।

टी ॥ दीक्षा और दान और तप और तीर्थ और होम और यज्ञ आदि जितनी अच्छी बातें हैं सब महिम्न के सोलहवें हिस्से को भी नहीं प्राप्त होती हैं ॥ ३५॥

मू ॥ समाप्तोयं समेस्तोत्रं सर्वमीश्वरवर्णनं अनूपमंमनोहारिसुराथं गंधर्वभाषितं ॥ ३६॥

टी ॥ पुष्पदंत कहते हैं कि जिसमें ईश्वर का वर्णन है ऐसा मेरा जो स्तोत्र है सो पूरा हुआ कैसा स्तोत्र है कि जिसकी बराबरी और स्तोत्र नहीं कर सक्ता और चित्त का प्रसन्न करने वाला है ॥ ३६॥ । मू।

महेशान्नापरोदेवो महिम्नोनापरास्तुतिः अघोरान्नापरोमंत्रोनास्तितत्वं

اشلوک ۳۵

دکیشا دانگ تپس تیرتھنگ
ہوم جگیادکاکریا مہمنہ استو
پاٹھسیہ کلانگ نارہنت کھوڈشینگ

ٹیکا ۳۵

دکیشا اور دان اور تپ اور تیرتھ اور ہوم اور جگ آدِ جتنے اچھی باتین ہین سب مہمن کے سولھوین حصہ کو بھی نہیں پراپت ہوتی ہین۔

اشلوک

سماپتوینگ سمستوترنگ سرب
میشوربرننگ۔ انوپ منگ
منوہاری پونینگ گندھرب بھاکھتنگ

ٹیکا

پشپ دنت کہتے ہین کہ جسمین ایشر کا برن ہے ایسا میرا جو استوتر ہے سو پورا ہوا کیسا استوتر ہے کہ جسکی برابری اور استوتر نہین کرسکتے اور دل کا خوش کرنے والا ہے،

اشلوک

مہیشا نناپرو دیوو مہمنو ناپرستتہ
اگھورا نناپرو منترو ناستِ تتونگ

गुरोः परम्॥ ३७ ॥

टी॥ शिव से परे और देव नहीं है और महिम्न से परे और स्तुति नहीं है और अघोर मंत्र से परे और मंत्र नहीं है और गुरु से परे और तत्त्व नहीं है ॥ ३७ ॥

मू॥ कुसुमदशननामा सर्वगंधर्वराजः शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ३८ ॥

टी॥ पुष्पदंत जो है सब गंधर्वों का राजा और शिव जी का दास अपने गुरु की महिमा से क्रोध करके भ्रष्ट हो गया था सो इस महिम्न के बनाने से शिव जी ने उसको दुख से बाहिर किया और उस के भ्रष्टपने को दूर किया और सब तरह के दोषों से उसका उद्धार कर दिया ॥ ३८ ॥

گرو پرم -

ٹیکا

٣٧

شیو سے پرے اور دیو نہیں ہے مہمن سے پرے اور استت نہیں ہے اگھور منتر سے پرے اور منتر نہیں ہے اور گرو سے پرے اور تت نہیں ہے

اشلوک

٣٨

کسم دشن ناما سرب گندھرب راجہ ششدھر بر مولے دیو دیوسیہ داسہ - سوکھل نج مہمنو بھرشٹ ایواسیہ روکھات استون مدمکار کھی دبیہ دبیہ مہمنہ -

ٹیکا

٣٨

پشپ دنت جو ہے سب گندھروں کا راجہ اور شیوجی کا داس اپنے گرو کی مہما سے کرودھ کر کے بھرشٹ ہو گیا تھا سو اس مہمن کے بنانی سے شیوجی نے اوسکو دکھ سے باہر کیا اور اوسکے بھرشٹ پنے کو دور کیا اور سب طرح کے دکھوں سے اوسکو ادّھار کر دیا -

मू ॥ सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमो
क्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः
प्रांजलिर्नान्यचेताः व्रज-
ति शिव समीपं किन्नरैः स्तू
यमानः स्तवनमिदममो-
घं पुष्पदंत प्रणीतं । ३९ ।

टी ॥ जो इस स्तोत्र को रोज़ रोज़ हाथ जोड़ के और शिवजी में चित्त लगाय के पाठ करैगा वह शिवजी के निकट जायगा और देवता उस की स्तुति करैंगे कैसा स्तोत्र है महिम्न कि जलदी फल का देने वाला पुष्पदंत का बनाया हुआ है ३९

मू ॥ श्री पुष्पदंत मुखपंक
ज निर्गतेन स्तोत्रेण कि-
ल्बिषहरेण हरप्रियेण कं
ठस्थितेन पठितेन समाहि
तेन सुप्रीणितो भवति भू
तपतिर्महेशः ॥ ४० ॥

टी ॥ जो यह स्तोत्र कंठ हो तो महादेवजी प्रसन्न होते हैं कैसा स्तोत्र है कि पापों का हरने वाला है

۳۹ اشلوک

سُرور مُن پُوجینگ سوُرگ موکشیک
ہیتنگ پٹھت یدمنکھیہ پران جلر
نانیہ چیتہ برجت شیو سمیپنگ کنریہ
استویمانہ استون مدمموگھنگ
پُشپ دنتنگ پرنیتنگ -

۳۹ ٹیکا

جو اس استوتر کو روز روز ہاتھ جوڑ کے اور
شیوجی میں چت لگا کر پاٹھ کریگا وہ شیوجی
پاس جائیگا اور دیوتا اوسکی استت
کرینگے یہ مہمن استوتر کیسا ہے کہ جلد پھل کا
دینے والا پشپ دنت کا بنایا ہوا ہے -

۴۰ اشلوک

سری پشپ دنت مکھ پنکج نرگتن
استوترین کل بکھہ ہرین ہر پریین
کنٹھہ استھتین پٹھتین سماہتین سو
پریتو بھوت بھوتپتر مہیسہ -

۴۰ ٹیکا

جو یہ استوتر کنٹھ ہو تو مہادیوجی پرسن

और शिवजी को प्यारा है और पुष्पदंत के मुख कमल से निकला हुआहै ॥ ४ ॥

इतिश्रीपुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नाख्यंस्तोत्रं समाप्तम् ॥ सं १९३६ ।

चौपाई

करिजिज्ञासा कुन्दन लाल ।
हरिवंशलाल पंडित किरपाल
संवत उन्निस सै तेईसा ॥*॥
भाषास्तुति करीगिरीशा * ॥

ہوتے ہیں کیسا استوتر ہے کہ پاپوں کا ہرنے والا ہے اور شیوجی کو پیارا ہے اور پُشپ دنت کے مکھ کمل سے نکلا ہوا ہے –

اِت سری پُشپ دنتا چارج برچتنگ مہمنا کھیہ استوتر سماپتم

چوپائی

کرجگیاسا کُندن لال ✤✤
ہربنس لال پنڈت کرپال ✤
سمت اُونیس سے تیئسا ✤
بھاکھا اُستت کری گریسا